

५४. कात वीर्य दोष दान विधि

आशा मरुप्रति
ASHA ARCHIVES

3067

५४. कात वीर दीप दान विधि

आशा भरुवाधि
ASHA ARCHIVES

3067

रत्नीगणेशायनमः॥ ॥ अथ कार्त्तवीर्यदीपदानविधित्तिरूपग॥
नशादोसमीचीकृत्स्नगणमथनलेपयम्॥ ॥ गुरुसर्वभारुद्रम
धुलनन्दुःष्ठदत्तपद्मवायुमुवाः घटम्बोः सुदर्शनवक्रम्बाः गन्ध
धुलकृष्ण॥ घटम्बश्चिमरागणमथनलेपय० गदूपनियुक्तं
लिवित्वाः चक्रचन्द्रननः नक्षत्रगणधुलवृक्षुधलिवित्वाः दीप
पागुमरुत्तनसंभध्ययुक्तापनिनिधायः नक्षत्रवर्द्धिकागणधुलं च
निधायः गुरुसत्ताकाददिधगः सफाकुलंवहिर्निःसृगांडित्वा॥ पा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
उददितादिमण्यगचगुनांगुलात्त्वहिनखं गुणं ददितां वनां कुलि
कां हभो निषं कृष्ण ॥ ॥ पूजा सामाग्री मजी कृष्ण दोग ॥ १ ॥ म
यित्वा पूजन माल ॥ ॥ गगनादोपपन्नं जनं गुणवत्तमं ॥ ॥ ग
गा गुणवत्तमं पूजयता ॥ गगनः कुल ॥ १ ॥ धनं ॥ ॐ नमः ॥ चन्द्रनाकरगनपू
ज ॥ कुल ॥ १ ॥ धनं ॥ ॐ समुद्रादकं दूरे रूढं स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ गगनादिनाच
मनं ॥ ॐ कक्षवाय स्वाहा ॥ ॐ नाना यनाय स्वाहा ॥ ॐ साधवाय स्वा
हा ॥ ॥ गगनः सामान्यार्थकृष्णपनं ॥ ॐ आधनं ॥ १ ॥ कृष्णदित्या ॥ १ ॥ रूढं
१ ॥ गगनग्रीवा सः ॥ ॐ प्रचोदयात् अमृताय रूढं ॥ ॐ कार्त्तवीर्याय ॥ १ ॥ ॐ

विष्णुर्गो ॥ ॐ सहस्रकनाय मं

१ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मंचीसिला ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
मं सुलाय ॥ १ ॥ कुलं निधाय ॥ नमः ॥ ॐ गन्धोदगनिधाय ॥ अङ्गुली मूढ
भगीर्धवाहनं ॥ ॐ क्रौं ग ॥ १ ॥ वयमून चैव ॥ गगनवती सन स्वरी ॥ न
र्मदासिन्धुकावनी कुलस्री सन्निधीय ॥ पूजा ॥ ॐ ॐ सामम सुलाय
नमः ॥ घट ॥ १ ॥ पूजा ॥ ॐ चन्द्रनाकरगपूष्पं ॥ १ ॥ वं ॥ १ ॥ धनं मूढा ॥ गाल
वयदिग्वन्धनं ॥ १ ॥ रूढं ॥ १ ॥ गकुलनदवद्वानप्राक् ॥ १ ॥ रूढं ॥ १ ॥ गयया
वाप्राङ्गु ॥ १ ॥ कार्त्तवीर्याय विष्णुः महावीर्याय धीमहि ॥ गन्भीर्

नप्रवादयाग॥ ॥ अथ दानपूजा॥ उद्ध॥ ॐ विष्णाय २॥ ॐ महालक्ष्मि
 शिवामरागो ॐ मनस्वये २॥ ॥ पुनर्दक्ष॥ ॐ विष्णाय २॥ ॐ गंग
 ये २॥ ॐ यमुनाये २॥ वाम॥ ॐ कृत्वा पाताय २॥ ॐ गंगाय २॥ ॐ मि
 न्धवे २॥ ॐ यमुनाये २॥ ॥ पुनर्दक्ष॥ ॐ धर्म २॥ ॐ विधर्म २॥ ॥
 दक्ष॥ ॐ ईश्वरनिधन २॥ वाम॥ ॐ प्रद्युम्ननिधन २॥ ॥ पुनः॥ ॐ नन्या
 य २॥ ॐ सूनन्दाय २॥ ॐ चन्दाय २॥ ॐ प्रचक्षुषाय २॥ ॐ वलाय २॥
 ॐ प्रवलाय २॥ ॐ एडाय २॥ ॐ मूरुडाय २॥ ॐ वावामुपनूषाय

नमः॥ ॐ दानद्वयगादिर्यानमः॥ ॥ अथ स्वासनरूपपदं॥ अर्घ्यं
 लनप्रादु॥ हं रुद्र॥ ॐ पृथ्वीमनूयुष्टमभिः सुगमकृन्दः कृष्णदिवता
 आसनापवर्गानविनिआगः॥ हस्तन आसनं पुरः ॥ ॐ पृथ्वीत्वया धरा
 लाकाः दवीत्वं विष्णुना धृता॥ त्वं वै धनयसां निगमं पविशं कनूवासनं
 ॥ नमस्कां॥ ॐ प्रद्युम्नीभय २॥ पूजा॥ ॥ अथ विष्णुनिवापनं॥ जलादगसर
 र्पिप्रसदसदिकुविकीर्य॥ हं रुद्र॥ ॐ अपसर्पन्तु यदगां यदगमु विष्णुहर्मा
 नं गनधनुर्गिवाक्या॥ विष्णुनिका ॥ गालग्रयदिर्यन्धनं ॥ ॥ गतः सूर्या
 र्य॥ वाक्का मूककामः॥ हं श्रीवृहहानववृद्धमर्द्यगृहशस्वाहा॥ ॐ पूषं २॥ ॥
 यदगां रविमंष्टिगा ॥ ३

वक्रोवायूलीनं गम्माद्यायूनासह विष्णु आकाशलीनं आकाश आकाश
 वक्रं अनन आकाशलीनं मनालीनं नादध्वनिं विणव्य ॥ गत्सहस्रदलकम
 लजीवात्मापनमात्मा शिवः किं भवं विणव्य ॥ ॥ गतावामकूटपापपन
 भं विचिन्त्य ॥ ॥ ध्यानं ॥ वामकूटस्थिरं पारं पूनं ककुलप्रणं ॥ खड्गहृत्पा
 दिनिवस्केन्द्रे स्वर्णसंयुज्ज्वलं ॥ सूनापानं हृदियुक्तं गुणकलकटिद्वयं
 ॥ गत्सं सग्नप्रददन्तं गप्रणं गपाटकं ॥ उपपाराकनामानं नकं ॥ श्रुति
 लावनं ॥ खड्गचर्मधनं कुनं पापकूटं विचिन्त्य ग ॥ ॥ गतिपापपनं
 विचिन्त्य यं मिनिवीकं नैषादः ॥ वानमाह नवानामेनासायावायनापू

अर्पः संप्रापदहं विरहः नमिनिवीजनचरुषष्ठिवानमाहृदयनदहनासाया
 पापपूजं सयहं संनवय ॥ नगः वमिनिवीजनः द्रात्रिं होरिवानमाहृद
 नललाहवत्यान्माहृकावर्षुमयीममृगवृष्टिनिपापएतमप्राव्य प्राप्तायाम
 न्यासकुमनावयवानिपाशः लंमिनिवीजनदहवानमाहृदयनदहनीक्षयः प
 नमात्मानः प्रहृतिगन्तमान्मन्त्रं गंगाहं कानं गन्तायाकां गंगावायूरगन्तामं उं गंगा
 जलं गन्ता कानिर्गमयस्व २ स्तुतं कुलनीं स्तुतं पयित्वा वृक्षनन्ध्रस्तुतं प्रनमात्मा
 हाको भस्माहं ॐ गि मन्त्रुलजीवात्मा प्रदीपकलिका कानककुलनीं दानादहयक
 मानीयककुलनीं मूलाक्षं स्तुतं पयित्वा स्व २ गानीं निवस्तुतं मस्तुतं किल्विषंद

वगानाधनआर्घ्यविरावय ॥ ॐ गिरुगहुदि ॥ ॥ नगः प्राप्तायाम ॥ कीं वद
 कीं दहकीं ३ २ वं कमाक्रमेण ॥ ॥ अथ स्तुतं हृदि स्पृष्टान्या ॥ परिष्ठात्क
 र्माथ अक्रमेण ॥ अथादिन्यासः ॥ उं अस्मद्गी प्राक्षप्रणिष्ठा मनुस्य ॥ कृगपु
 लिः ॥ उं वृक्षा विष्णु गिव अषथ ॥ गिरुसि ॥ उं अथ इमामार्थवनीक
 न्दम ॥ मूखा ॥ उं प्रोक्ष ॥ किपनादवगार्थ ॥ हृदि ॥ उं अवीजाय ॥ गु
 ष्ठा ॥ उं कीं कय ॥ पादौ ॥ उं कीं कीलकाय ॥ सर्वांग ॥ उं प्राक्षप्रणि
 ष्ठा सिद्धार्थ उपविनिर्भागः ॥ कृगपुलिः ॥ ॥ नगः कनांगन्यासः ॥ उं
 ओं कीं व्रीं अं कं ॥ ओं पृथिव्या प्रायगं उवाचा का ॥ न्द्रात्मन हृदयाय ॥

ल्यामरुक्तस्तनउद्यनरनांरनगीगांनमामि॥ ॥क॥६४॥ॐ॥दलप्रधम
 प्राप्तिविन्दुप्रधवादिनमगान्तिनमः॥दय्यद्वायदलप्रधकादि॥नमः
 वरः॥नालदलप्रधकादिखानान॥गुप्ताप्रदलप्रधकादिताना
 न॥प्रोप्रोवरुदलवादिमगान॥क्रम॥द्विदलहं॥दमिगिन्मः॥॥ॐ॥थवहि
 मीरुकान्नामः॥ॐ॥नमः॥लेलाग॥ॐ॥नमः॥मूरववृ॥ॐ॥नमः॥द
 कन॥ॐ॥नमः॥वामन॥ॐ॥नमः॥दकक॥ॐ॥नमः॥वाम
 क॥ॐ॥नमः॥दकनासायां॥ॐ॥नमः॥वामनासायां॥ॐ॥नमः
 ॥दकग॥ॐ॥नमः॥वामग॥ॐ॥नमः॥ॐ॥नमः॥ॐ॥नमः॥ॐ॥



[illegible]

ॐ थं नमः ॥ वामजा नूनि ॥ ॐ दं नमः ॥ वामपादमनिवरन्ध्रा ॥ ॐ धं नमः ॥ वामपादं
 गुलिसृल ॥ ॐ नं नमः ॥ वामपादागुल्फराग ॥ ॐ प्रं नमः ॥ दक्षपा ॥ ॐ रं नमः ॥
 वामपा ॥ ॐ वं नमः ॥ पृष्ठवं ॥ ॐ लं नमः ॥ नालो ॥ ॐ मं नमः ॥ उ ॥ ॐ
 ॐ यं त्वगात्मने नमः ॥ हृदि ॥ ॐ नं सृगात्मने नमः ॥ दक्ष ॥ ॐ लं मासात्म
 ने नमः ॥ वामा ॥ ॐ वं मदात्मने नमः ॥ क्वदि ॥ ॐ हं भूध्यात्मने नमः ॥
 हृदयादिदहहस्त ॥ ॐ धं मजात्मने नमः ॥ हृदयादिवा महस्त ॥ ॐ सं धु
 ज्ञात्मने नमः ॥ हृदयादिदक्षपाद ॥ ॐ हं प्राध्यात्मने नमः ॥ हृदयादिवा
 मपाद ॥ ॐ लं वीजात्मने नमः ॥ हृदयादिनालो ॥ ॐ दं पनमात्मने नमः

॥ हृदयादिमूर्वानं ॥ ॐ रिमारुकान्यासः ॥ ॥ मगः कं वादिमारुकान्या
 सः ॥ कं वं ॥









